चतुर्थ अध्याय

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की प्रथाएँ एवं परंपराएँ

4.1 लमसेना रखना

4.2 दूध लौटाना

4.3 भूत- प्रेत, चुड़ैल- डायन संबंधी प्रथा-परंपरा

4.4 घोटुल की प्रथा

4.5 भूल- बिहाव की प्रथा

4.6 गुदना- गुदाने की प्रथा

4.7 तीज-त्यौहार मनाने की परंपरा

4.8 पंचायत की प्रथा-परंपरा

4.9 तम्बाकू बाँटने की प्रथा

समन्वित निष्कर्ष :

संदर्भ ग्रंथ सूची

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की प्रथाएँ एवं परंपराएँ

साठोत्तरी कालखंड़ हिंदी साहित्य में क्रांति का कालखंड़ रहा है। इस युग में नये लेखकों का उल्लेखनीय स्थान हैं। उसमें राजेंद्र अवस्थी जी का स्थान महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी कहानियों का वस्तुगठन एवं शिल्प को नये परिवेश में सजाया और सँवारा है अवस्थी जी ने कहानी विकास को गति दी है और साथ-ही-साथ कहानी को पारदर्शिता एव संवेदनीय अनुभूति प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

राजेंद्र अवस्थी जी ने नई कहानी में उत्तराधिकार में जो कुछ पाया उसे उन्होंने बिना सोचे समझे ग्रहण नहीं किया। प्राप्त मुल्यों से उन्होंने अपनी कहानी की अंतरिक प्रक्रिया की प्रकृति को जीवन बोध के साथ जोड़कर ग्रहण किया है। हर लेखक अपने अनुभूत जीवन को निरंतरता से जीवन खण्ड़ों को उठाकर अभिव्यक्त कर देतें हैं। प्रारंभ से ही अवस्थी जी ने कहानियों का अध्ययन सरस और मनोरंजक कर दिया है। उन्होंने कहानियों में तथ्यों को प्रकाशित किया है। कथा साहित्य में उनका हस्ताक्षर स्वातंत्र्योत्तर लेखकों में प्रमुख रहा है। उनकी प्रारंभिक कहानियों में आंचलिकता का रंग कुछ गहरा झलकता है। उन्होंने ग्रामीण परिवेश के चित्रण के माध्यम से प्रेमचंद जी की विचारधारा को आगे बढ़ाया है।

प्रारंभ में अवस्थी जी ने ग्रामीण तथा आदिम प्रधान अंचलों को अपनी कथा का आधार बनाया है किंतु आगे चलकर उन्होंने अपनी कहानियों में महानगर के किसी अंचल विशेष को चित्रित किया है। उन्होंने आंचलिकता की परिभाषा को विस्तृत धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। आंचलिकता की परिभाषा करते हुए वे कहते है।

"अंचल का सीधा साधा अर्थ है 'जनपद' या क्षेत्र। जिस कथा कृति में किसी विशिष्ट जनपद या क्षेत्र के जनजीवन का समग्र चित्रण वहाँ की भाषा, वेशभूषा,

धर्मजीवन, समाज संस्कृति और आर्थिक तथा राजनैतिक जागरण के प्रश्न एक साथ उभरकर आयें वह 'आंचलिक' कृति होगी।"[1]

अवस्थी जी की कहानियों की पृष्ठभूमि में समाज का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। राजेंद्र अवस्थी जी ने सामाजिक परिवेश व समस्याओं को रचनाओं में उतारा है। 'लमसेना', 'महुआ आम के जंगल' इन कहानी संग्रहों में अवस्थी जी ने आदिम जनजीवन का प्रामाणिक अंकन किया हैं। 'महुआ आम के जंगल' कथा संग्रह की सभी कहानियाँ आदिमों के जनजीवन पर आधारित है। कथा संग्रह की कहानियों में ग्रामीण तथा आदिम अंचलों को कथा का आधार बनाया हैं।

अवस्थी जी के 'महुआ आम के जंगल' कथा संग्रह की कहानियों में आदिमों के जीवन का प्रामाणिक विवेचन किया है। इसमें उन्होंने आदिमों के रीति-रिवाज, धार्मिक संस्कार, रहन-सहन, प्रथा-परंपराओं का चित्रण किया है। समाज में मान्यता प्राप्त विधियाँ समाज की प्रथा-परंपराएँ बनती रहती है। प्रथा में जब सामूहिक कल्याण एवं उपयोगिता की भावना रहती है तब प्रथा को रूढ़ि का रूप प्राप्त होता है। रूढ़ियों के साथ धार्मिक अंधविश्वास जुड़ा रहता है। समाज में रूढ़ियों का पालन धार्मिक अंधविश्वासों और दबाओं के कारण किया जाता है। अत: रूढ़ियों के प्रति अनास्था या अविश्वास प्रकट करना धार्मिक विश्वासों को धक्का पहुँचाना है। भारत के आदिमों में अनेक प्रथाएँ परंपराएँ प्रचलित हैं। धर्म, पंथ, जाति, काल तथा अंचल के अनुसार इसमें परिवर्तन दिखाई देता है। आदिमों में अधिकतर विविध रूढ़ि-परंपरा के दर्शन होते हैं। आदिम जनजीवन में रूढ़ियाँ शोषण का एक प्रभावी आयाम बनी हुई है। आदिम जनजीवन, अज्ञान, दरिद्रता एवं धर्म के गहरे अंकुश के कारण प्रथाओं और परंपराओ से कसरकर बँधा हुआ है। प्रामाणिक हिंदी कोश में अनुसार प्रथा शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है-'बहुत दिनों से या बहुत से लोगों में प्रचलित रीति-रिवाज है।'[2] इसी प्रकार प्रामाणिक हिंदी कोश में 'परंपरा' शब्द का अर्थ है...

"परंपरा 1) बहुत सी घटनाओं बातों या कामों के एक एक करके होने का क्रम,

2) वह विचार या क्रम जो बहुत दिनों से प्राय: एक ही रूप में चला आया हो,

3) किसी घटना, कार्य,पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम।"[3]

इस प्रकार प्रथा-परंपराएँ बहुत दिनों से लोगों में प्रचलित रीति-रिवाज हैं जिन्हें ठुकराना आदिम जनजातियों के बस में नहीं है, इसलिए आदिम लोग अपनी परंपराओं से जुड़े हुए रहते हैं। प्रथा-परंपरा को छोड़ना नहीं चाहते उन्हें छोड़ने से उनके जीवन में अनेक कठिनाईयाँ आने का उन्हें डर लगता हैं। राजेंद्र अवस्थी जी ने अपने कथा संग्रह 'महुआ आम के जंगल' में बस्तर के आदिमों में प्रचलित प्रथा-परंपराओं का चित्रण प्रस्तुत किया है यह कथा संग्रह आदिम संस्कृति का प्रामाणिक दस्तावेज है।

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य कहानियों में आदिम जनजीवन में स्थित प्रथा-परंपराओं का चित्रण किया है,जो लेखक की प्रतिभा एवं आदिमों के प्रति सहानुभूति का दस्तावेज हैं। यहाँ हम आदिमों की प्रथा-परंपराओं के संबंध में चिंतन करेंगे।

4.1 लमसेना रखना :

'लमसेना' आदिम जनजीवन की प्रथा है। आदिमों के सामाजिक जीवन की एक अभिन्न अंग बनी है। इसमें जिस लड़की के साथ विवाह करना होता है उसके घर में उस युवक को 'लमसेना' बनकर घर के छोटे-मोठे काम करने पड़ते है। इसमें कोई गडबडी हुई तो न्याय जात पंचायत के पास माँगी जाती है।

"अनेक आदिम जातियों में प्रथा है जो वर लड़की की कीमत नहीं चुका सकता उसे कीमत पटाने के लिए पाँच से सात साल तक लड़की के घर रहकर काम करना पड़ता है, इस अवधी में उसे लमसेना कहा जाता है।"[4]

विवेच्य कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'लमसेना' है। लमसेना आदिम लोगों की एक प्रथा है। जिसका अत्यंत यथार्थ चित्रण लेखक ने यहाँ खींचा है। फुलिया, मंगुरू और चैतू ये प्रमुख तीन पात्र कहानी के है। फुलिया का लमसेना मंगरू है। एक दिन मंगरू से पीटने के बाद फुलिया उससे घृणा करने लगती है। इसी बीच उसका प्रेम चैतू से

जुड़ जाता है। मंगरू यह बर्दाश्त नहीं करता वह पंचायत करवाता है और दूध लौटाने की बात पर जीत जाता है। उसने फुलिया के घर रहकर काम किया है। पंचायत फैसला करती है कि फुलिया का विवाह चैतू से नहीं मंगरू से किया जायेगा। इस प्रकार प्रेम करने वाले दो प्रेमी बिछ़ड़ जाते हैं। प्रेमियों के बिछड़ने की मार्मिक व्यंजना कथा को उँचे शिखर पर ले जाती है। आदिमों के स्वच्छन्द प्रेम करने की स्वतंत्रता में भी समाज किस तरह दखल देता है, इस असंतुष्टि को अवस्थी जी हमारे सामने रखते है।

'लमसेना' सर्वहारा वर्ग के शोषण की वेदनामयी कहानी है। साथ ही साथ इस कहानी में आदिम समाज जीवन के कठोर बंधनों को स्पष्ट किया है। सच तो यह है कि आदिम समाज में पायी जानेवाली रूढियों के मूल में उनके समाज के हित,आडबंर,ढोंग, कृतिमता,स्वार्थ आदि पनपने लगते हैं। इन सबका परिणाम बुरा होता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'लमसेना' कहानी की नायिका 'फुलिया' है। कभी-कभी समाज द्वारा बनाये गए नियम ही उस समाज के युवक- युवतियों की स्वतंत्रता छीनकर उसके जीवन में दु:ख दर्द भर देते हैं। इसका सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानी में अवस्थी जी ने किया है। इस संदर्भ में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का कहना महत्वपूर्ण लगता है - "लमसेना कहानी फुलिया और चैतू की व्यथा को अंकित करती है,साथ ही उन सामाजिक और नैतिक रूढियों को भी जिनके बीच व्यक्ति की इच्छाएँ छटापटाकर दम तोड़ देती है।"[5]

इसी प्रकार अवस्थी जी ने 'ऊसर खेत' कहानी में 'लमसेना' प्रथा का चित्रण किया है। मुंदरी,पिन्ना,बीरा ये कहानी के प्रमुख पात्र है। पिन्ना के पिता ने मुंदरी के बाप बीरा से कर्जा लिया था। दो साल बाद उसकी मृत्यु होने के कारण उसका लड़का पिन्ना बीराके घर में काम करता है। वह जिंदगी भर काम करता रहेगा पर अपने पिता का कर्जा कभी नहीं उतार सकेगा। पिन्ना बीरा के घर में अपने पिता का कर्जा पटाने के लिए लमसेना के रूप में काम करता है। इससे आदिमों की आर्थिक स्थिती पर अवस्थी जी गहराई से चिंतन किया है। आदिमों में आज भी ये प्रथाएँ-परपराएँ प्रचलित है, जिन्हें वे नहीं छोड़ना चाहते।

'लमसेना' यह प्रथा अनेक आदिम जनजातियों में विशेष रूप से प्रचलित प्रथा है। लमसेना के संबंध में संक्षेप में कहा जा सकता है कि पिता के द्वारा नौकर के रूप में पुत्री का भावी पती अपने घर में रखा जाता है। जिसके स्वभाव धर्म को परखकर लड़की की शादी उससे की जाती है।

4.2 दूध लौटना :

भारतीय आदिम समाज अनेक प्रथा-परंपरा, रीति-रिवाजों में जकड़ा हुआ है। इन प्रथा-परपराओं का वे आँखें मूँदकर पालन करते हैं। जिस प्रकार आदिमों में लमसेना रखने की प्रथा है,उसी प्रकार उनमें दूध लौटाने की प्रथा दिखाई देती है। "भारत के अनेक आदिवासियों में यह प्रथा है कि यदि एक परिवार की लड़की दूसरे परिवार को दी गई है तो लड़की देनेवाले परिवार को अधिकार है कि वह उस दूसरे परिवार की लड़की से शादी कर ले मरजी से नहीं तो जबरन। इस प्रथा को दूध लौटना कहते है।"[6] अवस्थी जी ने आदिमों की इस प्रथा का चित्रण 'लमसेना' कहानी में किया है। कहानी की नायिका फुलिया के चैतू के साथ प्रेम संबंध जुड़ने के कारण मंगरू से विवाह करना नहीं चाहती। इस बात से मंगरू लाल-पीला हो जाता है। वह घोटुल में फुलिया द्वारा दी गई तम्बाकू को छीनकर फेंक देता है। मंगरू लाल पीला हो कर कहता है- "यह नहीं हो सकता मैंने पंचायत बुलाई है फैसला पंचायत करेगी।"[7] वह पंचायत के पास न्याय माँगने जाता है।

यह पंचायत गाँववालों के लिए 'पंच परमेश्वर' की भाँती होती है। उसका न्याय भला-बुरा चाहे जैसा भी हो उसके सामने सभी को सिर माथे चढ़ाना पडता है, इसलिए फुलिया, चैतू और मंगरू आँख लगाये पंचो की ओर देखते है। पंच फुलिया और मंगरू दोनों की राय सुनते हैं। मंगरू की बात को फुलिया के पिता ने स्वीकार नहीं किया तो उसने लमसेना की बात उठाई। फुलिया के घर रहकर उसने दो साल जो काम किया था उसका हरजाना माँगता है। फुलिया के पिता गरीब होने के कारण हरजाना देना उनके

बस की बात नहीं। पंचों ने फैसला सुनाया कि - "फुलिया चैतू से ब्याह कर सकती है,पर फुलिया के बाप को मंगरू के लमसेना रहने का हरजाना देना पड़ेगा और दूध लौटने की या तो कीमत चुकानी पड़ेगी अथवा किसी दूसरी लड़की का ब्याह मंगरू से या उसके किसी भाई से करना पड़ेगा।"[8]

अवस्थी जी ने आदिमों की प्रथा-परंपराओं का यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में किया है। दो प्रेम करनेवाले सच्चे प्रेमी फुलिया और चैतू बिछ़ड जाते है, और फुलिया का विवाह वह न चाहते हुए मंगरू से किया जाता है। मंगरू दूध-लौटाने की बात पर जीत जाता है। अवस्थी जी ने प्रेम करने वाले प्रेमियों की अंर्तव्यथा तथा आदिमों में प्रचलित प्रथा-परंपराओं का प्रस्तुत कहानी में सुंदर एवं मार्मिक चित्रण किया है, जिसमें वे सफल हुए है।

4.3 भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन मान्यता संबंधी प्रथा-परंपरा :

आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति और सभ्यता एवं प्रभाव से दूर आदिमों का जीवन भय, भ्रम एवं अज्ञान से युक्त रहा है। आदिमों की मानसिक दुर्बलता और अंधश्रद्धा का समन्वित रूप भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन के रूप में उभरता है। आदिमों का आज भी भूत-प्रेत,चुड़ैल-डायन पर अटूट विश्वास रहा है। आदिम लोग बीमारी दूर करने के लिए, बांझपन हटाने के लिए, गांव की सुरक्षा के लिए, संकट से मुक्ति पाने के लिए भूत प्रेत का आधार लेते हैं। अमरसिंह रणपतिया के मतानुसार-"शिक्षा प्रचार और प्रसार से ऐसे विश्वासों में ढील आना स्वाभाविक है,कई अंधविश्वास सुसंकृत लोगों पर भी छाये हुए हैं। विज्ञान के चमत्कारों ने इस प्रकार के विश्वासों को अवश्य झझकोरा है।"[9]

आदिम लोग अज्ञान, अशिक्षा अंधश्रद्धा आदि कई कारणों से भूत-प्रेत, चुड़ैल-ड़ायन पर विश्वास करते है। अवस्थी जी ने आदिमों की भूत-प्रेत, चुडैल-डायन संबंधी मान्यताओं, प्रथा-परंपराओं का यथार्थ चित्रण कहानियों में किया है। विवेच्य कहानी संग्रह में अवस्थी जी ने 'चाँद के पीछे चाँदनी के नीचे' कहानी में भूत- प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी आदिमों के विश्वास का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में एक

पंजाबी सिपाही द्वारा बनवाया गया राजमहल है। पंजाबी सिपाही गाँव की लड़की 'झिरिया' से प्रेम करने लगता है, वह उससे शादी भी करना चाहता है। लेकिन गाँव की लड़की का परजात में ब्याह हो गाँववालों को पसंद नहीं है। इसके कारण गाँववालों ने झिरिया का ब्याह किसी दूसरे लड़के से करा दिया जिसे झिरिया बिलकुल नहीं चाहती थी। जिस रात झिरिया का मन के विरूद्ध ब्याह हुआ उसी रात उसने सामने के पीपल के झाड़ में फन्दा लगाकर खुदखुशी की। झिरिया की अतृप्त आत्मा अब चुड़ैल बन चुकी थी, उसकी आत्मा रात में पंजाबी से मिलने आती और कहानी वह उसके पास आ जाये। अब यह राजमहल चुड़ैल का आवास समझा जाता है।

वर्षो बाद रियासत का बड़ा अफसर गाँव में आने के कारण गाँव में नाच-गान हुआ। उसे ठहरने का इंतजाम गायता (गाँव का मुखिया) के द्वारा घोटुल से लगे रेस्ट हाऊस थानागुडी में किया। लेकिन उसने यहाँ रहने की अपेक्षा राजमहल में ठहरने का निश्चय किया। वह राजमहल का किस्सा सुनकर हँसते हुए बोला- "बहुत खूब जंगली आदमी, हम आज तुम्हारी चुड़ैल से मिलेगा। उसे देखेगा और उससे बातें करेगा।"[10] गाँव की लड़की 'महुआ' नाच करते वक्त उसे पसंद आई थी जिसे अफसर ने राजमहल में बुलाया। महुआ बहुत खुबसूरत लड़की होने के कारण अफसर ने उसका कोमार्य भंग करने के लिए उसे बुलाया। अफसर द्वारा उससे प्यार की बातें करने के दौरान महुआ को लगा कि कहीं से झिरिया का भूत आकर उसकी जान बचा लेगी परंतु ऐसा नहीं हुआ। महुआ की ओर आकर्षित होते हुए अंग्रेज अफसर कहता है - "महुआ कितना सार्थक नाम है तेरा, चल अब उठ और अपने कोमल हाथों से लाँदा ढाल।"[11] महुआ ने चतुराई से अपना मन कठोर करके अपने आँसू रोककर लाँदा में चने जैसी माहुर की गोली मिलाई। लाँदा (शराब) पीकर अफसर को मौत हो गई। सुबह जब यह खबर गाँव भर फैल गई कि झिरिया चुड़ैल ने अफसर को मार डाला।

प्रस्तुत कहानी में महुआ अपनी इज्जत बचाने के लिए अफसर को जहर देकर उसका काम तमाम करती है, अंधविश्वासी ग्रामीण आदिम सोचते है कि झिरिया

चुड़ैल ने अफसर की जान ली। महुआ को इस बात का तनिक भी दु:ख नहीं हुआ वह कहती है-"हमारा गाँव क्या आसपास के सैकडों गाँव जानते है कि राजामहल में चुड़ैल रहती है।"[12]

अवस्थी जी ने 'महुआ आम के जंगल' कहानी में आदिमों में प्रचलित भूत-प्रेत, चुडैल-डायन की प्रथा का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में आदिम जन अपने देवता नारायण देव की पूजा करके उसे प्रसन्न करने का प्रयास करते है। उनका यह उत्सव देखने के लिए अंग्रेज अफसर आया है। आधी रात नाच-गाना होता रहा,सब अपने-अपने घर चले गये। गोरे अफसर के ठहरने का इंतजाम उसके कहने के अनुसार राजमहल में किया गया था। सुकवारिया द्वारा राजमहल का किस्सा सुनकर अंग्रेज अफसर कहता है - "हम भूत-प्रेत कुछ नहीं मानता, यह तुम लोगों का बहम है।"[13] राजमल में अंग्रेज अफसर अकेला ठहरा वह आधी रात में घबराकर इधर-उधर देखने लगा कोई औरत उसकी ओर बढ़ी चली आ रही है। उसका चेहरा ड़रावना था। अंग्रेज अफसर का मुँह जैसे किसी ने बंद कर दिया था,वह काँप रहा था और आँखों के सामने उसे केवल उस लडकी का भयानक चेहरा ही दिख रहा था। उसने जैसे ही उठने की कोशिश की किसीने उसके पैर पकड़कर उसे पछाड़ दिया। उसने दो तीन फुलाटें भरीं और बिस्तर से दूर जमीन पर जा पड़ा। अफसर की यह हालत देखकर गाँव के मुखिया, ओझा और गुनियाँ ने मंत्र-तंत्र एवं झाड-फूक के द्वारा उसे ठिक किया। प्रस्तुत कहानियों में अवस्थी जी ने आदिमों की भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन की प्रथा-परंपराओं यथार्थ चित्रण किया है।

आदिम जन भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन पर विश्वास करते है उन्हें लगता है कि भूत-प्रेत के प्रकोप के कारण गाँव में अनेक बाधाएँ फैलती है और गाँव पर संकट आने से गाँववालों का जीवन खतरे में पड़ता है। इसी डर के कारण आदिम लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। प्रस्तुत कहानी में राजेंद्र अवस्थी जी ने आदिमों में प्रचलित भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी मान्यताएँ यथार्थ रूप में उजागर किया है।

४.४ घोटुल की प्रथा :

आदिमों में बस्तर की बेंगा, गोंड-माडिया जाति में घोटुल इस सामाजिक संस्था की प्रथा है। घोटुल को 'कुमारगृह' कह सकते है। घोटुल गाँव से बाहर बाँस की चटाइयों से त्रिकोण रूप में बनाई झोपड़ी होती है। इसकी दिवारे मिट्टी और गोबर से लिपी होती है, मध्य में एक बड़ा हॉल होता है। घोटुल के भीतरी हॉल को घोटूल के सदस्य जवान और कुंआरे लड़के-लड़कियाँ मिल-जुलकर सजाते हैं। सजावट के लिए जंगली और घरेलू पशु-पक्षियों के चित्र बनाये जाते हैं। घोटुल दिनभर सुना रहता है परंतु रात के आठ-नौ बजने से कुमार और कुमारियाँ यहाँ भीड करती हैं। घोटुल में रहने की अवधि विवाह पूर्व पाँच वर्षो तक की होती है। इन पाँच वर्षो में घोटुल का मुखिया सिरदार कुमारों-कुमारियों को घोटुल के संबंध में सभी नियमों और घोटुल की मान्यताओं को समझा देता है और इन्हीं नियमों का पालन करने संबंधी पूर्व सूचना देता है।

राजेंद्र अवस्थी 'जंगल के फूल' (1960) उपन्यास में घोटुल का वर्णन करते हुए कहते है-"घोटुल कच्ची मिट्टी की एक छोटी सी झोपड़ी है। बीच में खुला मैदान चारों और परछी। परछी की दिवारों पर कई चित्र आडे, तीरछे, सीधे, टेढे। घोटुल के सारे सदस्य अपनी मरजी से लगन के साथ इन्हें बनाते है। उनकी कला इन चित्रों में बोलती है। ये चित्र उनके जिंदगी का इतिहास कहते हैं। घोटुल के खुले मैदान के बीच आग जलती रहती है। यही उनका उजेला है। यहीं जंगली जानवरों से उनकी रक्षा करता हैं।"[14]

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में घोटुल की प्रथा का चित्रण किया है। घोटुल के नियमानुसार प्रत्येक युवती का साईगुती साथी होता है। घोटुल के सदस्य युवक-युवतियाँ दिनभर का काम जंगलों में करते हैं और जैसे ही रात होती है,तो खाना-पिना निपटाकर घोटुल में आते है। अवस्थी जी विवेच्य कहानी संग्रह की 'सिरदार' कहानी में घोटुल का यथार्थ चित्रण किया है- "रे रे रेला, रे रे रेला,रेलो रे....' की संयुक्त आवाज साफ सुनाई देने लगी। यही था गढबंगाल का घोटुलराइ जैसी छोटी-

छोटी झोपडियों से भरे गाँव के एकदम बाहर,खजूर,छिवला और कटीली की झाड़ियों से घिरा फूस का एक कच्चा सा झोंपड़ा। हम उसके द्वार पर जब पहुँचे तो सारे लड़के - लडकियाँ आग के घेरे, हाथ में हाथ डाले गोल दायरे में नाच रहे थे नृत्य के साथ गीत के बोल बराबर गूँज रहे थे। "[15]

अवस्थी जी ने गढबंगाल के आदिमों में प्रचलित घोटुल की प्रथा-परंपराओं का यथार्थ चित्रण 'सिरदार' कहानी में किया है।

अवस्थी जी ने 'विभाजन' कहानी में कहानी की नायिका मोटियारी के द्वारा घोटुल के प्रति आकर्षण एवं घोटुल नियामों के प्रति कटिबद्धता का चित्रण किया है- "बियारी के बाद मोटियारी ने अपना सिंगार किया। लाल हरा फुदंरा चोटियों में बाँधा और गले में लाल-सफेद घुँघचियों की माला पहिनी। अपना बिछावन लेकर रोज की तरह वह घोटुल की ओर चली गई। दस ग्यारह साल हो गये,वह इसी तरह रोज घोटुल जाती है। जब वह पाँच साल की थी तब से घोटुल जा रही है। पहले दिन उसका बाप उसके साथ लाया था। मोटियारी को मुंशी के सुपुर्द कर वह चला गया था। मुंशी ने तब उसे घोटुल के सारे नियम समझाये थे। धीरे-धीरे वह सब कुछ समझ गई थी। घोटुल की तरफ उसका आकर्षण अपने-आप बढ़ गया था और वह साँझ होने का रोज रास्ता देखते रहती थी। "[16]

यहाँ स्पष्ट होता है कि घोटल में एक-दूसरे प्रेमी के साथ स्वयं ही व्यवहार करते है। हर एक की अपनी प्रेमिका होती है। रातभर किस्सा-कहानी, नृत्य-गान होता है। सूरज निकलने साथ ही घोटुल खाली हो जाता है। अवस्थी जी घोटुल को मुक्त समाज की रचना में कड़ा शिष्टाचार सिखाने वाला केंद्र मानते हैं। अवस्थी जी का जीवन बस्तर, मंडला क्षेत्र के आदिमों के बीच रहकर बीता हैं इसलिए उन्होंने अपने उपन्यास और कहानियों में आदिमों की प्रथा-परंपराओं का प्रामाणिक विवेचन किया है। घोटुल आदिम जीवन की संस्कृती का अभिन्न अंग है,इसी में रहकर ही युवक-युवतियों को अपने जीवन में उचित शिक्षा की जानकारी एवं मनपसंद साथी चुनने का अवसर प्राप्त होता है।

4.5 भूल-बिहाव की प्रथा :

आदिमों में यह प्रथा अब भी शुरू ही। "जब कोई कुमारी गर्भवती कन्या ऐसे व्यक्ति के साथ ब्याह करे जिसका वह गर्भ नहीं है तो ऐसे ब्याह को 'भूल-बिहाव'कहते है।" [17]

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह में 'भाई बहन का ब्याह' कहानी में कथित उच्चवर्ग द्वारा आदिमों का शोषण और नारी के अस्थिर जीवन को चित्रित किया है। कहानी की नायिका 'दुलारी' किस प्रकार अनेक पुरुषों का शिकार होकर अपना जीवन व्यतित करती है इसका चित्रण अवस्थी जी ने किया है। कहानी की नायिका दुलारी का शोषण किस प्रकार ठाकूर करता है इसका मार्मिक चित्रण अवस्थी जी ने उजागर किया है।

प्रस्तुत कहानी में फागुसेंगरा (वसन्त के महिने में मनाया जानेवाला उत्सव) का चित्रण किया है। दलसिंह उस दल का मुखिया है। दलसिंह दुलारी से प्रेम करता है। उत्सव देखने आये ठाकूर साहब का दिल दिमाग भी हिरणी की तरह उचटती दुलारी पर अटक गया था। दुलारी की उमर कोई **25** बरस, कमल की तरहा छिटका यौवन। दुलारी ठाकूर की नजरों से न बच सकी उन्होंने दुलारी को बखरी में बुलाकर झूठी दिलासाएँ देकर उसका कौमार्य भंग कर दिया था। दलसिंह जो उसके पीछे जान भी देने को तैयार था अब उसे देखते ही नाक भौंह सिकोड़ लेता हैं, क्योंकि दुलारी ने उसे धोखा जो दिया था। ठाकूर साहब से उसका कौमार्य भंग कर देने के बाद दलसिंह उससे नफरत करता हैं। दलसिंह से ठूकरा देने पर दुलारी का विवाह धरमू के साथ किया जाता है। आदिमों में इस प्रकार के विवाह को भूल बिहाव की प्रथा मानकर उसका पालन किया जाता है,इन प्रथा-परंपराओं को वे छोड़ना नहीं चाहते ये परंपराएँ आदिम समाज की धरोहर रही हैं।

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की 'जलता सूरज' कहानी में आदिमों की इस प्रथा का विवेचन किया है। बंजारी,विलियम,जोसेफ,कंगला आदि कहानी के प्रमुख पात्र है। बंजारी से प्यार भरी बातें कहकर विलियम उसका कौमार्य भंग कर देता

है। बंजारी ने साहस दिखाकर पंचायत बुलाई है,बेशरम होकर सब कुछ पंचो के सामने कह देती है। विलियम बंजारी की सारी बातों को साफ टाल देता है। सरपंच फैसला करते है- "कुछ भी हो बंजारी अभी नादान है। किसी के बहकावे में आ गई होगी। उसका कोई दोष नहीं। वह प्यार कंगला से करती थी, कंगला चाहे तो उसे ब्याह ले।"[18] कंगला तो गाँव छोड़कर चला गया था कि बंजारी को पेट आ गया है। आखिर जब कोई उसे ब्याहने को तैयार नहीं हुआ तो वह जोसेफ के गले बाँध दी गई। जोसेफ जाति का गोंड था,पर अब वह ख्रिश्चियन बन चुका है और अपने को पक्का ख्रिश्चियन मानता है।

यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिमों में अनेक रीति-रिवाज,प्रथा-परंपराएँ होती है जिन्हें वे ठुकराना नहीं चाहते। विवेच्य कहानियाँ 'भाई बहन का ब्याह' तथा 'जलता सूरज' आदिमों की ऐसी प्रथा-परंपराओं का विवरण देती है जो नारी की अंर्तव्यथा को उद्घाटित करती है। किस प्रकार आदिम स्त्री कथित उच्च्य वर्ग द्वारा शोषण का सामना करती है इसका अंकन विवेच्य कहानी यों में किया है। 'भूल बिहाव' यह प्रथा आदिमों में आज भी विशेष रूप से प्रचलित है। कथा में अवस्थी जी ने आदिमों की प्रथा-परंपराएँ, रीति-रिवाज, जातिपंचायत, आदिम नारी का शोषण, ग्रामीण किशोरी की अल्हड़ता तथा विद्रोह के स्वरों को प्रमुखता दी है।

4.6 गुदना-गुदानो की प्रथा :

आदिमों में यह प्रथा विशेष महत्वपूर्ण है। इन लोगों का ऐसा विश्वास है कि मरने के बाद आत्मा के साथ शरीर की यदि कोई चीज परलोक में जाती है तो ये गुदने ही हैं। इन्हीं के द्वारा आत्मा की पहचान होती है। आदिमों और भारतीय धर्म व्यवस्था में कुछ विश्वास श्रद्धा मान्यता स्वीकार की है जो अंधविश्वास की कोटी में आते हैं। समूचा आदिम समाज अंधविश्वास, रीति-रिवाज, प्रथा-परंपराओं की कोटी में अटका हुआ है। आदिम लोग आँख फड़कना, छींक आना, बांझपन हटाना, बरसात के लिए देवताओं की पूजा करना, शरीर गोंदना, भविष्य देखना, मंत्र-तंत्र, शकुन-अपशकुन आदि में विश्वास रखते है। गुदना-गुदाना इसी संबंधी एक प्रथा है। इस परंपरा के पीछे

उनका अंधविश्वास मूल कारण रहा है। गुदनों का आदिम समाज में अपना विशिष्ट स्थान है। यह प्रथा न केवल बस्तर में नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रचलित है। भारतीय आदिम समाज में इस प्रथा के संबंध में श्री.चन्द्र जैन का कथन है-"आदिवासी लोक जीवन में यह परिपाटी उसी प्रकार व्याप्त है जिस भाँति जल में शीतलता,आग में उष्णता एवं दूध में नवनीत समाहित है।" [19]

अवस्थी जी ने आदिमों में गुदने की प्रथा का चित्रण आलोच्य कहानी संग्रह की 'विभाजन' कहानी में किया है। कहानी की नायिका 'मोटियारी'अपने शरीर पर बचपन से ही गुदने गुदाते आई है। मोटियारी के पूरे देह पर गुदने के निशान अनगिनत तारे के समान लगते हैं। जब वो हमजोली लडकियों के साथ खेलती है तो सबसे अलग दिखाई देती है। ऐसा लगता है, जैसे गोदनेवाले ने सारा अपना कौशल मोटियारी के देह में भर दिया है। वह बचपन से ही गुदने गुदाती आ रही है उसके सात-आठ साल की आयु में एक बैगा बुढ़िया ने मछली गुदाई थी। गुदना गुदाते समय दर्द के कारण वह पीठ ऊपर उठाती रहतीं,सूजे की नोक की चुभन के कारण वह चीख उठती थी। उस दर्द के मारे चिखती-चिल्लाती अपनी बेटी मोटियारी को समझाती हुई माँ कहती है- "यह सुख का दर्द है बेटी। जिस तरह अंधेरी रात के बाद उजेली रात आती है, उसी तरह यह निशान ही तेरे जीवन को बदल देंगे। ये तेरे लिए बॉका प्रेमी खोजकर लायेंगे।"[20] अर्थात गुदना-गुदाई की प्रथा से बाँका प्रेमी मिलने की संभावना यहाँ माँ द्वारा व्यक्त की जाती है।

मोटियारी की माँ की धारणा है कि गुदने से जीवन में बाँका साथी की प्राप्ति होती है, जिससे धरती पर स्वर्ग लाने मदद होती उतरता है और मरने के बाद यमराज की यातना से छुटकारा मिलता है। माँ की इन सारी बातों से मोटियारी बदन पर मछली गुदाती है। अब उसकी सारी देह पर गुदने के निशान है। गाँव के हर युवा लड़के की नजर उसके देह केंद्रिंत होकर कई नौजवान उसके सामने अपने प्यार की झोली फैलाते हैं। यहाँ स्पष्ट होता है आदिमों में गुदना-गुदाने की प्रथा विशेष परंपरा प्रिय लगती

है, जिन्हें वे अपना कर्तव्य समझकर निभाते चले आ रहे हैं।आदिम लोग इन रीति-रिवाज,प्रथा-परंपराओं का पालन जी जान से करते आ रहे हैं।

4.7 तीज-त्यौहार मनाने की परंपरा :

आदिम लोग देवी-देवता की आराधना परंपरा से करते आ रहे है।भारतीय समाज तथा आदिम समाज में अज्ञान,अशिक्षा तथा धर्मांधता के कारण कई देवी-देवताओं के नाम पर तीज-त्यौहार,उत्सव-पर्व आयोजित होते हैं।संभव-असंभव इच्छा पूर्ती के लिए विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा भारतीय जनता की विशिष्टता रही है।अत: इसी कारण आदिम जन पर्व-त्यौहार मनाने की परंपरा पर आड़िग विश्वास रखते है।

तीज-त्यौहारों का महत्त्व के संदर्भ डॉ.रामनाथ शर्मा का कथन है -"उत्सवों का प्रयोजन धार्मिक शिक्षा देना,सामाजिक संगठन बनाना,मनोरंजन करना, संस्कृति का ज्ञान देना,मेल जोल बढ़ाना, एकता को दृढ़ करना, श्रम और दु:ख से छुटकारा पाना,यात्रा करना,जीवन में चेतना जागृति करना,कार्य करने की प्रेरणा देना,मानसिक शांति की प्राप्ति करना,समय का सदुपयोग करना, देश-प्रेम विकसित करना आदि है।"[21]

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की 'महुआ आम के जंगल' 'एक प्यास पहेली' कहानियों में आदिमों की तीज-त्यौहार मनाने की प्रथा का यथार्थ चित्रण उजागर किया है। प्रस्तुत कहानी आदिमों में प्रचलित 'लारूकाज' त्यौहार का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती है।आदिम लोग इस त्यौहार में नारायण देवता की पूजा करते हैं।अपने देवता को प्रसन्न करने के लिए पशुबलि चढाते हैं।त्यौहार में आदिम लोगों द्वारा सुअर की पूजा करने से पहले जमीन को गोबर से लीपकर उसे सुखाया जाना, एक गड्डा खोदना, उसमें गरम पानी डालना, सुअर को गड्डे में ढकेल देना सुअर की दर्द भरी आवाज निकलने पर देवता के प्रसन्न होने की भावना को मानना देवता की प्रसन्नता पर आदिमों में खुशियों का माहौल निर्माण होता है।साल भर पूरा गाँव आपत्तियाँ, बाधाओं से मुक्त होने की भावना आदिमों के मन में उत्पन्न होना, चुड़ैल की बाधा न होने

की भावना आदिमों के मन में उत्पन्न होना आदि के माध्यम से उनके उत्सव-पर्व एवं देवी-देवता संबंधी परंपरा के दर्शन होते है। नारायण देव की पूजा से वे मानते है कि सारा गाँव विपत्तियों से बचता है और सालभर कोई आपत्ति नहीं आती।

अवस्थी जी ने 'एक प्यास पहेली' कहानी में बैगाओं के प्रमुख देवता 'काल्हदेव' की सवारी का चित्रण किया है। यह त्यौहार आदिम लोग बडे धूम -धाम से मनाते है। इस त्यौहार में देवता को अनेक आभूषणों से सजाया जाता है,इसका यथार्थ चित्रण विवेच्य कहानी में अवस्थी जी ने किया है। "सबेरे-सबेरे गाँव के हर घर सुपारी घुमा दी गयी थी। और सारा गाँव जान गया था कि आज काल्देव की सवारी निकलेगी। गाँव का सबसे नौजवान युवक जंतरी इस साल दूल्हे की तरह सजाया गया था- पैरों में महावर, कमर में तूस का पायजमा, गले में हार और सिर पर सफेद पगड़ी। गीतों की धुनों और ढोल-माँदर के सुरों के साथ गाँव-का-गाँव जाग उठा।"[22] प्रस्तुत कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों की देवताओं के प्रति परंपरा से प्रचलित प्रथा का चित्रण किया है।

आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति और सभ्यता एवं प्रभाव से दूर आदिमों का जीवन भ्रम,भय एवं अज्ञान से संचलित रहा है। यहाँ स्पष्ट होता है आदिम लोग बीमारी दूर करना आपत्तियों से गाँव की रक्षा करना, संकट से मुक्ति पाना आदि कई कारणों से परंपरागत चली आ रही प्रथाओं का पालन करते है। स्पष्ट है कि सुख-दु:ख आदि सभी अवसरों पर आदिमों में देवी-देवताओं की पूजा का प्रचलन रहा है। देवी-देवताओं की पूजा इन लोगों में स्थित धार्मिक अंधविश्वास या कच्ची मानसिकता का घोतक है। देवता को प्रसन्न करने की उनकी मानसिकता इस प्रथा एवं परंपरा के माध्यम से स्पष्ट होती है।

4.8 पंचायत की प्रथा-परंपरा :

भारतीय समाज व्यवस्था का संबंध न्याय व्यवस्था के साथ सदा से जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से सामाजिक व्यवस्था में आत्मकल्याण तथा सामाजिक कल्याण की भावना प्रमुख है। जनतंत्र प्रणाली में यही भावना प्रमुख है कि सभी व्यक्तियों को अपने

व्यक्तिगत विकास के लिए पूर्ण अवसर प्राप्त हो सके। स्वातंत्र्यपूर्व काल में जातिपंचायत, राजनीतिक व्यवस्था एवं न्यायिक अवस्था का प्रतीक थी,जो जाति संबंधी पारस्पारिक झगड़ों पर निर्णय देती थी। "भारत की सच्ची आत्मा पंचायत में ही है। यह पाप-पुण्य,सत्य-असत्य का फैसला करती है यह पुराणी व्यवस्था है।"[23]

तत्कालिन युग में जातिपंचाय न्याय व्यवस्था का एक आयाम रही है। पंचायत समाजहित के लिए कार्य करनेवाली,न्याय देनेवाली सामाजिक संस्था है। आदिमों में जातिपंचायत के प्रमुख को मुखिया कहा जाता है। इनके नियम अलिखित,परंपरागत होते हैं। विभिन्न जाति के लोग इसमें सम्मिलित होते हैं जो अपने समाज के हित के लिए कार्य करते है। पंचायत गाँव के किसी मंदिर के पास होती है। गाँव में किसी पर अन्याय, अत्याचार, विवाह, तलाक, अपराध, अनैतिकता से संबंधित संघर्षात्मक घटनाओं पर पंचायत फैसला देती है। आज तंटा-बखेडा गाँव की संकल्पना इसी के मूल में रही होगी ऐसा लगता है। अवस्थी जी ने इसी जातिपंचायत का यथार्थ ढंग से चित्रण विवेच्य कथा संग्रह की कहानियों में उजागर किया है।

अवस्थी जी ने आलोच्य कहानी संग्रह की 'ऊसर खेत' 'विभाजन' तथा अन्य कहानियों आदिमों जातिपंचाय संबंधी प्रथा परंपराओं का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। 'ऊसर खेत' अवस्थी जी की प्रतीकात्मक कहानी है इसमें उन्होंने नारी की अंतर्व्यथा तथा पंचायत के न्याय पर नारी की होनेवाली संवेदना का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। कहानी की नायिका 'मुंदरी' विज्जा पाण्डुम त्यौहार में नाच-गाने में मस्त है,उसी वक्त हुंगा, मुंदरी के प्रति बुरी नियत प्रकट करते हुए उससे तंबाकू माँगता है, तो मुंदरी उसके घर जाकर हुंगा की पत्नी के साथ झगड़ा करती है। बात काफी बढ़ गई और तब जैसा कि उनके समाज में अब तक होता आया है, हुंगा की औरत ने अपने सवा साल के लड़के की गरदन मुंदरी के सामने तोड़ दी और अपने पवित्र होने का प्रमाण दिया। रात बीते सब लोग अपने घर वापस आये, और हुंगा ने यह देखा तो पंचायत को खबर दी। पंचायत में गाँव के सिरहा (गुनाई करनेवाला) पेरमा (धार्मिक कृत्य करनेवाला) और

हन गुण्डा (मृतक संस्कार करनेवाला) सभी शामिल थे। "सबने बात सुनकर मुंदरी को दोषी ठहराया। उनका न्याय वाजिब था। स्वयं मुंदरी ने अपना दोष स्वीकार कर लिया था। इसके बदले पिन्ना भेजी को भरी पंचायत के बीच अपने इकलौते लड़के की भी गरदन तोड़नी पड़ी।"[24]

प्रस्तुत कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों की जातिपंचायत संबंधी मान्यताओं को प्रमुखता दी है। गाँववालों के लिए 'पंच' परमेश्वर होते हैं। उनका फैसला अंतिम फैसला मानकर मुंदरी और उसका पति भेजी इसे स्वीकार करते है, और अपने इकलौते लड़के की इच्छा न होते हुए भी पंचों के फैसले के अनुसार गरदन तोड़नी पड़ती है। विवेच्य कहानी में अवस्थी जी आदिमों की पंचायत संबंधी प्रथा-परंपराओं पर प्रकाश डालते हुए उसमें परिवर्तन लाने संबंधी अपने विचारों को स्पष्ट किया है।

अवस्थी जी ने 'जड बंधन' कहानी में आदिमों की जातिपंचायत संबंधी प्रथा-परंपराओं का यथार्थ विवेचन किया है। प्रस्तुत कहानी में अवस्थी जी ने एक ओर सामाजिक नियमों की कठोरता तो दूसरी ओर प्रेम और ममता के कोमल पक्ष को चित्रित किया है। भारतीय समाज व्यवस्था में अंतर्जातीय विवाह को सहजता से मान्यता नहीं दी जाती बल्कि इसका बहिष्कार किया जाता है। चाहे वह आदिम समाज हो या सुसंस्कृत समाज। यदि कोई युवक या युवती इस नियम का उल्लंघन करती है तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। प्रस्तुत कहानी इन्ही बातों को उजागर करती है।

'फुलिया' और 'पदमसिंह' कहानी के प्रमुख पात्र है। पदमसिंह फुलिया से प्यार करता है और उससे विवाह करना चाहता है, लेकिन उसकी जाँति-जाँति तथा माता-पिता का पता न होने के कारण गाँववाले आदिम लोग इस विवाह को स्वीकार नहीं करते। सारा मामला पंचायत में चला जाता है। पंचायत फुलिया और पदमसिंह के संबंधों को नाजायज करार देती है तथा पंच फैसले के विरूद्ध वे दोनों जाते हैं, तो उन्हें गाँव छोडने के लिए मजबूर करती है। पदमसिंह अपने पुजारी बाबा से जाँति-पाँति संबंधी अपने विचारों की घिसी-पिटी मान्यताओं के संबंध में कहता है- "यह रूढ़ि आखिर कब

तक चलेगी बाबा? फुलवा के बिना मैं रह नहीं सकता तुम मुझे फुलवा की जाति बताओं मैं उसी जाति का हो जाऊँगा।"[25] प्रस्तुत विचार आदिमों कठोर पंचायत व्यवस्था एवं प्रथा-परंपरा के कारण पदमसिंह करता है। वह इस व्यवस्था पर विश्वास नहीं रखता जिसका न्याय हृदयहीन होता है, जो अंधे की काठी तरह लीक पर चलता है। प्रस्तुत कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों की जातिपंचायत संबंधी प्रथा तथा मान्यताओं का चित्रण एवं समाज के द्वारा बनाये गये नियम इन जडबंधनों से युवा पीढ़ी को मुक्त करने संबंधी अपने विचार स्पष्ट किये है।

यह जातिपंचायत व्यवस्था आदिमों की एक परंपरागत धरोहर रही हैं, जिस पर उनका सारा समाज जीवन निर्भर रहता है।

4.9 तम्बाकू बाँटने की प्रथा :

आदिमों का जीवन अज्ञान,अशिक्षा,दरिद्रयता,अंधविश्वास के कटघरे में जकड़ा हुआ है। इन्हीं के परिणाम स्वरूप आदिमों में अनेक प्रथा-परंपरा एवं रीति-रिवाज है जिन्हें वे ठुकराना नहीं चाहते। आदिमों में तंबाकू बाँटने की प्रथा विशेष प्रचलित है। जब कोई लडकी घोटुल में रहकर दिन बीताती है, तो वह अनेक युवकों से किसी एक को अपने जीवन साथी के रूप में चयन करती है और वह अन्य सदस्यों को तम्बाकू बाँटती है। लेकिन जीवन साथी के रूप में जिस युवक को वह चुनना चाहती है उसे वह तम्बाकू नहीं देती। आदिमों की इन प्रथा एवं परंपराओं का चित्रण विवेच्य कहानी संग्रह की 'तीर का तीनका' 'लमसेना' तथा 'ऊसर खेत' कहानियों में यथार्थ हुआ है।

'तीर का तीनका' कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों की तंबाकू बाँटने की प्रथा का प्रामाणिक विवेचन किया है। 'सुगरिन', 'अमलू' तथा 'शिकालगीर' कहानी के प्रमुख पात्र है। सुगरिन घोटुल में जाती थी तभी से वह घोटुल के सदस्य अमलू से प्रेम संबंध रखती है। लेकिन उसके पिता ने शिकालगीर से कर्जा न लेने के कारण उसका ब्याह शिकालगीर से तय किया है। हर दिन की तरह सुगरिन घोटुल में आई अनजाने उसकी नजर वहाँ चली गई वहाँ उसकी चटाई रोज बिछती है उससे ही समिप अमलू की

चटाई होती। घोटुल के हर चेलिक का साथ उसे देना पडा है पर मन अगर किसी ने बाँधा, तो वह अमलू था। घोटुल दिनक्रम चलता रहता है - "घोटुल की बेलोसा ने पुदगोट (तंबाकू रखने की ड़िबीया) सुगरिन के हाथ थाम दी अब उसके लिए ये सब नाजूक क्षण थे। एक-एक कर वह सारे चेलिकों को घुईगा (तम्बाकू) बाँटेगी- कोई नहीं बचेगा, पर वह अमलू को कैसे दे सकेगी?- कैसे? क्या दे भी सकेगी घुइगा?"[26] अवस्थी जी ने दो सच्चे प्रेम करनेवाले प्रेमियों की व्यथा विवेच्य कहानी में प्रस्तुत की है, जो आदिम समाज की प्रथा-परंपराओं के परिणाम स्वरूप मिल नहीं सकते।

'लमसेना' कहानी भी दो प्रेमियों की अंतर्व्यथा को उजागर करती हैं। कहानी की नायिका 'फुलिया' अपने प्रेमी चैतू को तंबाकू नहीं देती कारण वह उसे अपने जीवन साथी के रूप में चुनना चाहती है। घोटूल के सारे सदस्यों को वह तम्बाकू बाँटती है। उसके घर लमसेना रहकर काम करनेवाले मंगरू को वह तम्बाकू देती है, तो वह उससे तम्बाकू छीनकर फेंक देता है इससे घोटुल में हंगामा मच जाता है। घोटुल के मुखिया फुलिया और मंगरू को अलग करके कहते हैं- "भाई इसमें झगड़े की क्या बात है। वह चैतू को चाहती है तो तू क्यों बीच में आता है।"[27] तम्बाकू बाँटने की प्रथा के अनुसार ये युवतियाँ जो युवक उन्हें पसंद आता है, उन्हें तम्बाकू नहीं बाँटती। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है, आदिमों में तम्बाकू बाँटने की प्रथा विशेष प्रचलित है। युवतियाँ तम्बाकू बाँटने के पश्चात युवक भी उन्हें बालों में लगाने के लिए कंघी भेट देते हैं। अपने जीवन साथी को तय करने की यह प्रथा आज भी आदिमों में प्रचलित है।

'ऊसर खेत' कहानी में अवस्थी जी ने किसी स्त्री के प्रति बुरी नियत प्रकट करने की वजह से तम्बाकू माँगने की प्रथा का प्रचलन प्रस्तुत किया है। कहानी में अप्रैल महिने में मनाया जाने वाला त्यौहार 'विजा पाण्डुम' का चित्रण लेखक ने किया है। फसल कटाई के पहले देवता को खुश करने के लिए इस त्यौहार का आयोजन किया जाता है। कहानी की नायिका 'मुंदरी' उसका पति 'पिन्ना' त्यौहार में शामिल होते हैं। हुंगा उस दिन लाँदा में मस्त रहता है। हुंगा की मुंदरी के प्रति बुरी दृष्टि होती है, लाँदा में मस्त

रहकर हुंगा मुदंरी से तम्बाकू माँगता है। मुंदरी हुंगा की इस हरकत से कृद्ध हो जाती है और उसको थप्पड लगाती है।इससे घोटुल में हंगामा मच जाता हैं। मुंदरी हुंगा के घर जाकर उसकी औरत से शिकायत करते हुए कहती है- "अरी तू अपने मरद को सुख नहीं दे पाती तो दो चार सौत बुला ले।तू जाने काहे की बनी है तेरे रहते तेरा मरद पराई औरत से तम्बाकू माँगे।" [28]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट होता है कि आदिम लोग किसी लड़की का ब्याह,त्यौहार आदि अवसरों पर घोटुल में नाँच- गाने का आयोजन करते है।और युवक- युवतियाँ एक-दूसरे का जीवन साथी मिलने की खुशी में तम्बाकू बाँटते है।राजेंद्र अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में आदिमों की इन प्रथा-परंपराओं यथार्थ चित्रण किया है।तम्बाकू बाँटने की प्रथा आदिमों में आज भी विशेष रूप में प्रचलित है।

समन्वित निष्कर्ष ः

राजेंद्र अवस्थी जी ने आदिमों में प्रचलित प्रथा-परंपराओं का विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में यथार्थ चित्रण किया है।आलोच्य कहानियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदिम समाज की सभी जन जातियाँ अज्ञानी, अंधश्रद्धा एवं रूढ़िप्रिय हैं।ये जनजातियाँ हर समय अपनी प्रथा-परंपराओं को बरकरार रखना चाहती हैं।इन्हें न मानने या ठुकराने की शक्ति आलोच्य कहानी संग्रह की किसी भी कहानी में दिखाई नहीं देती। ये प्रथा-परंपराएँ आदिमों के शोषण का आयाम लक्षित होती है।लमसेना रखना,दूध लौटाना, भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी मान्यताएँ, घोटुल,भूल बिहाव करना, शरीर गोंदना, तीज-त्यौहार मनाना, जातिपंचाय,तम्बाकू बाँटना आदि अनेक प्रथा-परंपराएँ आदिमों में रही है जो परंपरा से चली आयी हैं।

आदिमों में दूध लौटाना, लमसेना रखना ये प्रथाएँ विशेष रूप से प्रचलित है जिन्हें वे छोड़ना नहीं चाहते। भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन पर आदिम लोग विश्वास रखते है। इसका चित्रण अवस्थी जी 'चाँद के पीछे चाँदनी के नीचे', 'महुआ आम के जंगल'

कहानियों में किया है। घोटुल का आदिमों के समाज जीवन में काफी महत्त्व रहा है, घोटुल के नियम प्रथा-परंपराओं का युवक-युवतियाँ पालन करती है। घोटुल आदिमों की सामाजिक सांस्कृतिक विरासत है। आदिम जन जातीय संस्थाओं में शिक्षा केंद्र घोटुल रहा है। आदिम युवक-युवतियाँ यहाँ शिक्षा प्राप्त करते हैं। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में इन प्रथा-परंपराओं के खिलाफ विद्रोह नहीं हुआ है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि आदिम लोग परंपरागत चली आई हुई रूढ़ियों एवं प्रथाओं को ईमानदारी एवं प्राणपन वे निभाना चाहते है। अत: स्पष्ट है राजेंद्र अवस्थी जी ने इन्हीं पात्रों के द्वारा आदिमों में प्रचलित प्रथा-परंपराओं का विरोध करने का प्रयास किया है। प्रथा एवं परंपरा के शिकंजे में फसे आदिम को मुक्त होना होगा तभी आदिमों लोग विकसित होगें।

आज भारत परिवर्तन के दौर, विश्व की आर्थिक महासत्ता बनने जा रहा है। मानविय परिस्थिति की सही समझ के लिए नई विचार पद्धति, नई कार्य शैली, नई विचारधारा, विज्ञान तथा कर्म के बीच नये रचनात्मक संबंधों की आवश्यकता है। आज आर्थिक वृद्धि और लोकतंत्र के विकास के लिए देशव्यापी प्रबुद्ध वर्ग के द्वारा संचलित सांस्कृतिक अभियान की आवश्यकता है। इसी के अनुरूप अवस्थी जी ने आदिमों की प्रथा-परंपराओं पर आधारित जो लेखन कार्य किया है, वह प्रशंसनीय है।

संक्षेप में लगता है कि राजेंद्र अवस्थी जी ने आदिम जनजीवन की प्रथा-परंपराओं का चित्रण सशक्त रूप में चित्रित किया है। अनुभूति एवं संवेदना के बल पर उसे उभारा है। बचपन से आदिमों की संगति में और सानिध्य में रहने के कारण इन प्रथा-परंपराओं के चित्रण को उन्होंने अपनी अनुभूति और संवेदना के माध्यम से जिंदा रूप प्रदान कर दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1987 भूमिका से

2) सं.रामचंद्र वर्मा - प्रामाणिक हिंदी कोश, हिंदी साहित्य कुटिर, दिल्ली, सं.सं.2000 पृ.क्र.670

3) वही - वही पृ.क्र. 1098

4) सुरेश निरव - राजेंद्र अवस्थी इक्कीसवी सदी की दृष्टि, प्रमोद प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1982 पृ.क्र.26

5) भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र अवस्थी जी का कथासाहित्य, साहित्य निलय, कानपुर, पृ.क्र.72

6) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.11

7) वही - वही पृ.क्र. 18

8) वही - वही पृ.क्र. 18, 19

9) अमरसिंह रामपतिया - हिमाचंल लोकसाहित्य,सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.167

10) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.43

11) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.46

12) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.46

13) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.117

14) राजेंद्र अवस्थी - जंगल के फूल, राजपाल ॲण्ड सन्स, दिल्ली,प्र.सं.1960 पृ.क्र.24

15) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम क जंगल,राजेश प्रकाशन,दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.60

16) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.74

17) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.24

18) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.125

19) पी.आर.नायडू - भारत के अदिवासी विकास की समस्याएँ,राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, द्.सं.2002 पृ.क्र.440

20) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन,दिल्ली, पृ.क्र.67

21) डॉ रामनाथ शर्मा - भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र,राजहंस प्रकाशन,मेरठ, प्र.सं.1977 पृ.क्र.285 से 287

22) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम क जंगल,राजेश प्रकाशन,दिल्ली, प्र.सं.1987 वही पृ.क्र.145

23) डॉ. विमलशंकर नागर - अनुसंधान के नये सोपान, प्रेरणा प्रकाशन, मुराबाद प्र.सं.1994 पृ.क्र.32

24) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.36

25) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.100

26) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.161

27) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.18

28) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.36